International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 6; November 2016; Page No. 74-76

प्रसाद का नाट्य–साहित्य और आधुनिकता

डॉ. अनिता देवी

सहायक प्रवक्ता, मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

प्रस्तावना

'आधुनिकता' शब्द अधुना+इक+ता से बना है। शब्दकोश के अनुसार 'अधुना' का अर्थ है– अभी, आजकल, इन दिनों आदि। 'इक' का अर्थ है– इक संख्या, 'ता' संज्ञा शब्दों में लगाने वाला भाववाचक प्रत्यय है। अंग्रेजी में 'आधुनिकता' शब्द के लिए modrennity शब्द का प्रयोद किया जाता है। modrennity शब्द अंग्रेजी के modern शब्द से बना है जिसका निर्माण लैटिन के मूल शब्द (modo), से हुआ है। modern शब्द का अर्थ है– आधुनिक।[1] इसके अतिरिक्त आधुनिकता का कोशगत अर्थ है– आधुनिक हाने का भाव।[2]

आधुनिकता एक बहुचर्चित एवं विस्तृत विषय है तथा इसका संबंध विविध क्षेत्रों से है इसलिए इसकी कोई इक निश्चित परिभाषा देना कठिन है। आधुनिकता के स्वरूप और अवधारणा को लेकर जितने भी मत हैं, उनमें भिन्नता पाई जाती है। भारतीय साहित्य के संदर्भ में जब हम आधुनिकता की बात करते हैं तो उसे आधुनिक काल से जोड़कर देखते हैं। आधुनिक काल मध्यकाल के बाद के काल को कहा गया है। यह काल भाव, विचार और भाषा की दृष्टि से अपने पूर्ववर्ती काल से भिन्न था। डॉ. नगेन्द्र ने १८५७ को आधुनिक काल का प्रारंभिक बिंदु माना है क्योंकि "यह दो विरोधी ताकतों की टकराहट का काल था– सामंतवादी और पूंजीवादी। सामंतवादी शक्तियाँ अपनी सारी ताकत लगाकर सदा के लिए समाप्त हो गयी। सामंतवाद की सम्पूर्ण सम्भावनाएँ खत्म होने के बाद देश के प्रबुद्ध वर्ग ने नए सिरे से सोचना शुरू किया और अंग्रेज शासकों ने भी इस देश की परम्परा को समझकर आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का नवीनीकरण किया।"[3] जबकी पश्चिम में आधुनिक काल का आरम्भ १५वीं सदी (१४५३) से माना गया है। "आधुनिक काल कहते ही हमारे सामने एक साथ ही यूरोपीय इतिहास का सुधार और पुनर्जागरण युग–१४५३–मूर्त हो उठता है या फ्रांस की राज्यक्रांति (१७८९) की याद आ जाती है, जबकी बिल्कुल इसी अवधि और काल में भारतीय इतिहास अपने मध्य युग से गुजर रहा होता है३.. ।"[4] इसलिए यह जरूरी नहीं कि जो एक देश के लिए आधुनिक है वो उस समय दुसरे देश के लिए भी आधुनिक हो। इसी प्रकार आधुनिकता के लक्षण भी प्रत्येक काल में एक जैसे नहीं पाए जाते। अगर बहुत ही साधारण रूप में देखा जाए तो आधुनिकता विज्ञान के प्रभावस्वरूप बदली हुई सोच या मानसिकता है, यह तर्कपूर्ण दृष्टिकोण है जिसके बल पर व्यक्ति हर बात को विवेक की कसौटी पर कसकर उस पर अपनी स्वीकृति देता है। डॉ. नगेन्द्र लिखते है– "आधुनिक ज्ञान–विज्ञान और टेक्नोलॉजी के फलस्वरूप उत्पन्न मानवीय स्थितियों का नया, गैर–रोमैंटिक और अमिथकिय साक्षात्कार 'आधुनिकता' है,"[5] आधुनिकता के स्वरूप को और स्पष्ट करते हुए वे आगे लिखते हैं– "आधुनिक काल अपने ज्ञान–विज्ञान और प्रविधियों के कारण मध्यकाल से अलग हुआ। यह काल औद्योगीकरण, नगरीकरण और बौद्धिकता से संबद्ध है जिससे नवीन आशाएँ उभरी और भविष्य का नया स्वप्न देखा जाने लगा। देश, धर्म, राष्ट्र, ईश्वर आदि की नयी–नयी व्याख्याएँ की जाने लगी। आगे आने वाले समय में यही इहलौकिक दृष्टिकोण प्रगतिशील बन गया। इस प्रकार प्रत्येक काल में आधुनिकता का स्वरूप अलग–अलग है।"[6]

आधुनिकता के जो लक्षण हमें अज्ञेय के साहित्य में दिखाई देते हैं, वे प्रसाद के साहित्य में नहीं दिखाई देते। इसलिए आधुनिकता को लेकर अनेक प्रश्न उठते हैं जैसे– कोई कहता है कि आधुनिकता कालसापेक्ष है, कोई कहता है कालनिरपेक्ष है, कोई कहता है कालातीत है३३ फिर उत्तर में अनेक व्याख्याएँ की गई है। लेकिन आधुनिकता कालसापेक्ष भी हो सकती है और काल मुक्त भी। कबीर, मीराबाई आदि आधुनिक काल में नहीं बल्कि मध्यकाल में पैदा हुए लेकिन इनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं उनको उस काल में आधुनिक कहा जा सकता है। उनकी आधुनिक दृष्टि उन्हें काल की सीमाओं से बाहर कर कालातीत बना देती है। "इस प्रसंग में यह कहा जा सकता है कि आधुनिक युग ही आधुनिक नहीं है, आधुनिकता के निकष पर कई बीते युग भी खरे उतर सकते हैं और आधुनिक युग का बहुत–सा सम्भार अनआधुनिक हो सकता है।"[7] डॉ. घनंजय वर्मा आधुनिकता को कालसापेक्ष के स्थान पर दृष्टिसापेक्ष मानते हैं। वे लिखते हैं– "आधुनिकता को मतलब आधुनिक युग में रहना ही नहीं, उसे जीना भी है। आधुनिकता कालसापेक्ष धारणा नहीं हैं, वह दृष्टि सापेक्ष है।"[8]

प्रसाद का नाट्य साहित्य और आधुनिकता

आधुनिकता के स्वरूप पर संक्षेप में बात करने के उपरांत अब हमारे सामने ये प्रश्न उठता है कि प्रसाद के नाटकों में वे कौन–से बिंदु हैं जिनके आधार पर हम कह सकते हैं कि प्रसाद की दृष्टि आधुनिक रही है? आधुनिकता की दृष्टि से जब हम प्रसाद के नाटकों का अध्धयन करते हैं तो हम उनके नाटकों में तत्कालीन परिस्थितियों के प्रभाव को देखते हैं, उनके नाटकों में उनका समसामयिक चिंतन स्पष्ट दिखाई देता है। मानवता, राष्टीयता, स्वतंत्रताध्राजनैतिक चेतना, मंत्रिपरिषद का निर्माण, विश्वदृष्टि/विश्व–बंधुत्व की भावना, धर्म का सही स्वरूप, जातीय अस्मिता, पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव, नारी–चेतना, गांधी का प्रभाव, सांस्कृतिक–बोध, इतिहास–बोध, आदि कुछ ऐसे बिन्दु हैं जिनके आधार पर प्रसाद के नाटकों में आधुनिकता को देखा जा सकता है। प्रसाद के नाटकों में मानवता का स्वर बहुत ऊँचा है। उन्होंने देशभक्ति की भावना का विस्तार कर विराट भावना के साथ मानवता को व्यापकता के साथ अपने नाटकों में प्रस्तुत किया है। क्योंकि मानवता में धर्म, जाति, अमीर–गरीब का भेद भूलकर मानव को मानव समझा जाता है। प्रभाव द्वारा प्रतिपादित मानवता में धर्म और जाति का कोई स्थान नहीं है। अजातशत्रु नाटक में सम्राट बिंबसार सम्राट न होकर 'कोमल किसलयों झुरमुट में एक अधखिला फूल' होने की कामना करता है। इस प्रकार प्रसाद जातिगत भेदों पर आधारित मानव–समाज को मानवीय नहीं मानते वरन् सभी जातिगत, धर्मगत भूलाकर मानवता के गुणों को मानने वाली मानव–जाति को वास्तविक मानव–जाति मानते हैं। परोपकार को प्रसाद ने मानवता का सर्वप्रमुख गुण माना है। प्रसाद ने मल्लिका,

प्रेमानंद, सरमा, आदि अनेक ऐसे पात्रों का निर्माण किया है जो इन्हीं सिद्धांतों को अपनाते हैं।

महात्मा गांधी का राजनीति में पदार्पण १९२० के आस–पास हुआ। प्रसाद पर गांधी और रवीन्द्र का व्यापक प्रभाव पड़ा। प्रसाद ने अंहिसा, सत्य, दया, त्याग, ममता, परोपकार, क्षमा, हृदय–परिवर्तन, परस्पर सहानुभूति, प्रेम और करूणा को महत्तव दिया है। राज्यश्री, प्रेमानंद, अजातशत्रु, मल्लिका, गौतम आदि पात्रों पर तो इन सिद्धांतों का रंग बहुत गहरा चढ़ा है। प्रसाद ने करूणा को सर्वत्र न्यायदायिनी माना है। उस युग के प्रमुख सिद्धांत 'जियो और जीने दो' की प्रतिध्वनि भी हमें उनके नाटकों में सुनाई पड़ती है। उन्होंने क्षमा और त्याग से बढ़कर कोई दण्ड नहीं माना। राज्यश्री–"भाई। यहाँ त्याग का प्रश्न नहीं है। यह लोक–सेवा है। ऐसा राज्य करने का आदर्श आर्यावर्त की ही उत्तम–श्री है।"

जयशंकर प्रसाद कवि होने के साथ–साथ एक नाटककार, इतिहासकार, कहानीकार और उपन्यासकार भी थे। उन्होंने अपने साहित्य में कई तरह की राष्ट्रीय भावना को मुकर किया है। "उनके साहित्य में समाज, देश, दर्शन, मानव आदि पर असंख्य विचार बिखरे पड़े हैं।" प्रसाद युग से पूर्व हिंदी साहित्य में द्विवेदी युग राष्टीय जागरण का युग था। यही जागरण आगे चलकर परिपक्व होकर प्रसाद के साहित्य में राष्टीयता के रूप में सामने आया। प्रसाद देश और उसकी समस्याओं के प्रति सजग थे। देश की संस्कृति, प्रकृति, इतिहास, दर्शन, राजनीति और साहित्य के प्रति विशेष श्रृद्धा दिखाई और वे एक नई राष्टीय दृष्टि लेकर आए। प्रसाद के नाटकों का रचनाकाल लगभग प्रथम विश्वयुद्ध के आरम्भ से लेकर द्वितीय विश्वयुद्ध के मध्य का था उस समय भारतीय नेता स्वराज्य के लिए लड़ रहे थे। हर तरफ राष्ट्रीय आन्दोलनों की गूँज सुनाई देती है। गांधी के साथ–साथ दूसरे आंदोलनकारी फिरंगियों को भारत से निकालने के लिए प्रयत्नशील थे। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से वैज्ञानिक उन्नति भी जोर पकड़ रही थी। उस समय सामंतवाद और साम्राज्यवाद दोनों का विरोध किया जा रहा था। प्रसाद ने अपने नाटकों में राजनीतिक संघर्ष की भी विस्तृत चर्चा की है। कामना नाटक में प्रसाद ने पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के परिणाम को बड़े अच्छे से दिखाया है। वे भारतीय इतिहास और राजनीति को समझते हुए राजनीति में युद्ध ,हिंसा की बजाय मैत्री को महत्त्व देते हैं। "पर यदि राजनीति मित्रता से सफल होती हो, तो विग्रह करना उचित नहीं।" उन्होंने तत्कालीन राजनीति को देखते हुए अपने एतिहासिक नाटकों में प्राचीन राजतंत्रों की शासन–व्यवस्था को प्रस्तुत करते हैं। इन नाटकों में राजा, राज्य एवं शासन से जुड़ा संघर्ष है, जो प्रायः दो या दो से अधिक व्यक्तियों, राज्यों अथवा जातियों के परस्पर टकराने से होते हैं। प्रसाद ने राजनीति में गणतंत्र को शासन–व्यवस्था में सर्वोत्तम स्थान दिया है। उनको प्रजातंत्रीय शासन–व्यवस्था में मानव कल्याण की संभावनाएँ नजर आई। तत्कालीन ब्रिटिश शासन से उस समय जो संघर्ष चल रहा था वही संघर्ष हमें विशाख, चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त, अजातशत्रु और जन्मेजय का नागयज्ञ में दिखाई देता है। जन्मेजय का नागयज्ञ में प्रसाद समता, स्वतंत्रता और भाईचारा के सिद्धांत की स्थापना करते हैं। जरूरी नहीं कि राजा का पुत्र ही राजगद्दी पर बैठे और इस बात का भी प्रमाण नहीं है कि आज से पहले कोई दासी का पुत्र राजगद्दी पर न बैठा हो शक्तिमती– "दासी की पुत्री होकर भी मैं राजरानी बनी।" गौतम– "यह दंभ तुम्हारा प्राचीन संस्कार है। क्यों राजन! क्या दास, दासी, मनुष्य नहीं हैं? क्या कई पीढ़ी ऊपर तक तुम प्रमाण दे सकते हो कि सभी राजकुमारियों की संतान ही इस सिंहासन पर बैठी हैं या प्रतिज्ञा करोगे कि आने वाली कई पीढ़ी तक दासी पुत्र इस पर न बैठ पावेंगे?" अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए नाग मरने के लिए तैयार हैं। नाग– "वही जो औरों का हुआ है। होगा रण–चण्डी का विकट ताण्डव, आर्यों का, स्वाहा–गान, ऐर हमारे जीवन की आहुति। नाग मरना जानते हैं। अभी वे हीनपौरुष नहीं हुए हैं। जिस दिन वे मरने से डरने लगेंगे, उसी दिन उनका नाश होगा। जो जाति मरना जानती रहेगी, इसी को पृथ्वी पर जीने का अधिकार रहेगा।" उस समय भारतीय जनता अंग्रेजों के अत्याचार और शोषण से परेशान हो चुके थे, जो भी नेता अंग्रेजों के विरूद्ध आवाज उठाता था, उसी को जेल में डाल दिया जाता था। ऐसा करके वे भारतीयों की देशभक्ति की भावना को दबा रहे थे। भारत में जातिवाद फैलाकर, हिंदु–मुस्लिम दंगे करवाकर अपने स्वार्थ की सिद्धि कर रहे थे। प्रसाद अपने नाटकों के माध्यम से यही संदेश देना चाहते हैं कि हम जातिगत भेदभाव भुलाकर केवल भारतीयता को याद रखकर एवं सभी मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ स्वतंत्रता की लड़ाई लड़नी चाहिए। इसलिए चाणक्य ने छोटे–छोटे राज्यों को मिलाकर समस्त आर्यव्रत की बात करता है। चंद्रगुप्त की अलका हाथ में पताका लेकर पराधीन भारत में स्वतंत्रता की अलख जगाना चाहती है। "हिमाद्रि तुंग श्रृंग से, प्रबुद्ध शुद्ध भारती.....।" प्रसाद के नाटकों के पात्र अपनी मातृभूमि पर सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए तत्पर हैं। उनका सांस्कृतिक–बोध उनको एक ऊँचा स्थान प्रदान करता है।

प्रसाद केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में शांति स्थापित करना चाहते थे। वे भारतीय संस्कृति के उद्गाता थे। उन्होंने अपने नाटकों के माध्यमों से भारतीय संस्कृति के मूल–मंत्र वसुधैव–कुटुम्बकम का विस्तार किया है। सिहंल का राजकुमार धातुसेन स्कंदगुप्त से कहता है– भारत समग्र विश्व का है और समग्र वसुन्धरा इसके प्रेमपाश से आबद्ध है। अनादिकाल से ज्ञान की, मानवता की ज्योति यह यह विकीर्ण कर रहा है। वसुन्धरा का हृदय भारत किस मूर्ख को प्यारा नहीं है। अपनी समकालीन परिस्थियों से प्रभावित होकर प्रसाद ने अपने नाटकों में विश्व–प्रेम और विश्वमैत्री का जयघोष किया है। उनका संपूर्ण नाट्य–साहित्य विश्वमैत्री की ओर अग्रसर करने वाली करूणा, दया, क्षमाशील, उपकार आदि की भावना से भरा हुआ है। अजातशत्रु में गौतम मांधवी को कहता है– "क्षणिक विश्व का यह कौतुक है देवि अब तुम अग्नि से तपे हुए हेम की तरह शुद्ध हो गयी हो। विश्व के कल्याण में अग्रसर हो। असंख्य दुखी जीवों को हमारी सेवा की आवश्यकता है। इस दुखःसमुद्र में कूद पड़ो यदि एक भी रोते हुए हृदय को तुमने हँसा दिया, तो सहस्रों स्वर्ग तुम्हारे अंतर में विकसित होंगे। फिर तुमको परदुखकातरता में ही आनंद मिलेगा। विश्वमैत्री हो जाएगी– विश्व–भर अपना कुटुंब दिखाई पड़ेगा।" चंद्रगुप्त में सिकंदर भारत के दर्शन के प्रभावित होकर कहता है– "यह अद्भुत देश है।" स्कंदगुप्त में धातुसेन ब्राह्मणों की प्रशंसा करते हुए कहता है कि वह सभी के सुख की कामना करता है और सायं–प्रातः अग्निशाला में भगवान से प्रार्थना करते थे–

"सर्वेअपि सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चद्दुःखमाप्नुयात।।"

धर्म की श्रेष्ठता बताते हुए धातुसेन आगे कहता है कि "उनका धर्म समयानुकूल प्रत्येक परिवर्तन को स्वीकार करता है। 'जन्मेजय का नागयज्ञ' में आर्यों और नागों का आपसी संघर्ष में तत्कालीन हिंदु–मुस्लिम संघर्ष की झलक दिखाई देती है। इसके साथ–साथ आज भी कभी भाषा के नाम पर आसाम में और क्षेत्र के नाम पर कभी दक्षिण भारत में उत्तर भारतीयों पर हमले की घटनाएँ सामने आती हैं। मनसा जो गीत गाती है उसमें तत्कालीन राजनैतिक चेतना की झलक मिलती है–

क्या सुना नहीं कुछ, अभी पड़े सोते हो,
क्यों निज स्वतंत्रता की लज्जा खोते हो।

इस प्रकार प्रसाद के नाटकों की अनेक घटनाएँ ऐसी हैं जो आधुनिक घटनाओं और संदर्भ से मेल खाती हैं और प्रसाद अपने युग की समस्याओं के प्रति चिंतित दिखाई देते हैं। और उन्होंने जो समाधान प्रस्तुत किए हैं वो आज भी प्रासंगिक हैं।

संदर्भ ग्रर्थ

1. आदर्श हिंदी कोश – पं. रामचंद्र पाठक
2. बृहत् हिंदी कोश– कोलिका प्रसाद, राजवल्लभ सहाय, मुकुन्दी लाल श्रीवास्तव
3. हिंदी साहित्य का इतिहास, सं. डॉ. नगेन्द्र
4. आधुनिकता के बारे में तीन अध्याय– डॉ. धनंजय वर्मा
5. हिंदी साहित्य का इतिहास, सं. डॉ. नगेन्द्र
6. हिंदी साहित्य का इतिहास, सं. डॉ. नगेन्द्र
7. आधुनिकता के तीन अध्याय– डॉ. धनंजय कुमार
8. आस्वाद्य के धरातल– डॉ. घनंजय वर्मा
9. अजातशत्रु, प्रसाद
10. राज्यश्री, प्रसाद
11. चंद्रगुप्त, प्रसाद
12. स्कंदगुप्त, प्रसाद
13. जन्मेजय का नागयज्ञ, प्रसाद
14. विशाख, प्रसाद
15. कामना, प्रसाद